

संस्मरण - मेरे संग की औरतें

कक्षा-नवीं



0956CH02



द पैलेस स्कूल
सिटी पैलेस, जयपुर

(सी.बी.एस.ई. से संबद्ध)

संस्मरण – मेरे संग की औरतें (मृदुला गर्ग)

प्रस्तुत संस्मरण सी.बी.एस.ई. व राष्ट्रीय
शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
(एन.सी.ई.आर.टी.) हिंदी (भाग- 'अ') के
पाठ्यक्रमानुसार, कक्षा-नवीं की पूरक
पाठ्यपुस्तक 'कृतिका' (भाग -1) से
लिया गया है, जिसकी लेखिका मृदुला
गर्ग हैं।

चित्रात्मक आलेख - द पैलेस स्कूल,
सिटी पैलेस, जयपुर

प्राचार्या की कलम से



“परिवर्तन का रहस्य अपनी सारी ऊर्जा को पुरानी चीजों से लड़ने पर नहीं वरन नव- निर्माण पर केंद्रित करना है।” किसी बुद्धिजीवी द्वारा कही गई यह पंक्ति

पूर्णतः सत्य है क्योंकि आवश्यकता नवीनता और परिवर्तन की जननी है। शिक्षा जगत में भी नवीन विचारों तथा परिवर्तन का आगमन आवश्यकता अनुसार होता रहता है और शिक्षा के क्षेत्र में बदलते परिदृश्य के साथ समन्वय करने, शिक्षा को नवाचारों के माध्यम से आकर्षक व रोचक बनाने हेतु यह चित्रात्मक आलेख सहायक सिद्ध होगा। इस चित्रात्मक आलेख का निर्माण हम सभी के लिए अनूठा अनुभव रहा है। इस चित्रात्मक आलेख में भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यपत्रक, अभ्यास -पत्रक जोड़े गए हैं, जिससे विद्यार्थियों में अनुभव के आधार पर तथ्यों के विश्लेषण करने की क्षमता का विकास होगा तथा विद्यार्थी की सीखने और समझने की प्रक्रिया सरल, सुबोध और रोचक बनेगी।

यह चित्रात्मक आलेख हिंदी विभाग, कला विभाग व आईटी विभाग के शिक्षक-शिक्षिकाओं के अथक प्रयासों का परिणाम है। इस चित्रात्मक आलेख को प्रारूप देने व सभी के लिए इसे उपलब्ध कराने के लिए हम सी.बी.एस.ई. के आभारी हैं। हम श्री संदीप सेठी (एम.एस.एम.एस. म्यूजियम) के भी बहुत आभारी हैं, जिनके बहुमूल्य सहयोग, निरंतर प्रेरणा, मार्गदर्शन ने सदैव हमें प्रोत्साहित किया है।

मैं आशा करती हूँ कि शिक्षा जगत में यह चित्रात्मक आलेख 'मेरे संग की औरतें' रचनात्मक रूप से सुदृढ़, रोचक व अमूल्य सिद्ध होगा। इसी आशा से यह प्रयास किया गया है।

उर्वशी वॉरमैन

प्राचार्या

द पैलेस स्कूल, सिटी पैलेस, जयपुर

अस्वीकरण

द पैलेस स्कूल जयपुर द्वारा कृत यह चित्रकथा मृदुला गर्ग द्वारा रचित संस्मरण- मेरे संग की औरतें पाठ्यपुस्तक कृतिका, कक्षा नवीं को आधार बनाकर तैयार की गई है। इसके प्रारूप निर्माण या पटकथा (स्क्रिप्ट) में मूल पाठ में वर्णित तथ्यों को यथावत प्रस्तुत करने का यथासंभव प्रयास किया गया है तथा विद्यार्थियों के लिए पाठ को रोचक बनाने, नवीन शैक्षणिक प्रयोग की दृष्टि से सी.बी.एस.ई. द्वारा प्रदत्त निर्देशों का पालन करते हुए उक्त रचना की गई है। इसका उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारी को बदलना नहीं है।

यह पूर्णतः काल्पनिक है, इसके प्रारूप में कथा की रोचकता बनाए रखने के लिए कुछ काल्पनिक पात्रों, संवादों व घटनाओं का प्रयोग किया गया है, जिनका वास्तविक जीवन में मिलना मात्र संयोग होगा।

અનુક્રમણિકા

ક્રમ સં	વિવરણ
૧	અભિસ્વીકૃતિ
૨	સાભાર
૩	આમુખ
૪	પાત્ર પરિચય
૫	દૃશ્ય આરેખન
૬	ચિત્રાત્મક આલેખ
૭	અનુભવાત્મક અધિગમ ગતિવિધિ
૮	પ્રશ્નાવલી

अभिस्वीकृति

चित्रात्मक आलेख निर्माण समिति

प्रस्तुत चित्रात्मक आलेख विद्यालय के शिक्षाविदों के सम्मिलित प्रयासों का परिणाम है। इस आलेख के सहायक कथा के सभी पात्र एवं घटनाएँ पूर्णतः काल्पनिक हैं।

परिकल्पना	श्रीमती उर्वशी वॉरमैन, प्राचार्या
मुख्य सलाहकार	श्री संदीप सेठी, डायरेक्टर एजुकेशन एम. एस. एम. एस. द्वितीय म्यूजियम
विभागाध्यक्ष	डॉ० श्वेता गौड़
संवाद लेखन	श्रीमती सीमा झा, श्रीमती मोनिका शर्मा
कला संकाय	श्रीमती रेखा करणावत, श्रीमती मीता माथुर
तकनीकी संकाय	श्रीमती नीलिमा बज, श्रीमती उमा सैनी, श्री मोहन लाल सैनी

साभार

प्रस्तुत चित्र कथा में कुछ दृश्य एवं पात्रों के चित्र निम्न विद्यालयों के द्वारा साझा किए गए चित्रावली से लिए गए हैं, हम उनका सहृदय आभार व्यक्त करते हैं।

डी.पी.एस. कैम्प्टी	सड़क का दृश्य, कार पार्किंग बैठक कक्ष, भोजन की मेज
टैगोर इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर	घर का मुख्य द्वार, परदादीजी, चारपाई, बगीचा
एम.पी.एस. प्रताप नगर, जयपुर	गाँव का दृश्य, आँगन का दृश्य
एम.पी.एस., जयपुर	गाँव के कमरे का दृश्य

आमुख

प्रस्तुत चित्रात्मक आलेख लेखिका 'मृदुला गर्ग' द्वारा लिखित संस्मरण - मेरे संग की औरतें हैं। इसमें लेखिका ने अपने परिवार की चार पीढ़ियों की महिलाओं (परदादी, नानी, माँ और स्वयं लेखिका) के व्यक्तित्व, व्यवहार तथा उनके आदर्शों के विषय में विस्तार से लिखा है। लेखिका के स्मृति पटल पर उभरने वाला सर्वप्रथम चित्र उनकी नानी का है, जो बिल्कुल अनपढ़, पारंपरिक एवं पर्दा करने वाली महिला होने के बाद भी अपने देश की आज़ादी के प्रति इतनी अधिक संवेदनशील थीं कि वे अपनी पुत्री का विवाह निर्धन, स्वतंत्रता सेनानी के साथ करवा देती हैं। लेखिका की माता का बहू होने के किसी प्रचारित कर्तव्य का पालन न करते हुए भी अपनी सत्यवादिता और गंभीर स्वभाव के कारण उनका परिवार में बड़ा मान था। साथ ही विरासत में मिली देशभक्ति की अदम्य इच्छा ईमानदारी और मितभाषिता के कारण उनकी माँ को घर और बाहर दोनों जगह आदर और सम्मान मिलता था। उनके घर में सभी को चाहे वह छोटा बच्चा हो या बड़ा बुजुर्ग सबको अपने ढंग से जीवन जीने की छूट थी। इन दोनों महिलाओं के अलावा उनकी परदादी की भी अपनी कुछ विशेष आदतों की वजह से गाँव में बड़ी प्रसिद्धि थी। उनके बारे में एक बात प्रसिद्ध थी कि उनके तार भगवान से जुड़े हैं, वे जो चाहती हैं वो हो जाता है, इसी वजह से उनके घर में चोरी करने के लिए आया हुआ एक व्यक्ति उनके संपर्क में आकर भलामानुष बन जाता है। कथा को विस्तार देते हुए प्रस्तुत चित्रात्मक आलेख के कुछ दृश्यों में रचनात्मकता की स्वतंत्रता ली गई है, जिसका उद्देश्य मुख्य कथा के उद्देश्य के समकक्ष है। सहायक कथा में तीन पीढ़ियों की महिलाओं के जीवन में घटने वाली घटनाओं को मुख्य कथा में घटने वाली घटनाओं से करके दिखाया गया है। 'मेरे संग की औरतें' पाठ में संयुक्त परिवार की महत्ता और उसके सांस्कृतिक मूल्य उभर कर सामने आते हैं। लेखिका का उद्देश्य यह भी स्पष्ट करना है कि परंपरावादी परिवारों में महिलाओं की स्वतंत्रता तथा विचारों का सम्मान किस प्रकार किया जा सकता है। आधुनिकता की ओर अग्रसर समाज में हम अपनी परंपराओं और मूल्यों से विमुख होते जा रहे हैं और हमें दूसरों के प्रति संवेदना एवं सहानुभूति की भावना नहीं खोनी चाहिए। इस पाठ में लेखिका ने पुरानी पीढ़ी के अनुभव तथा नई पीढ़ी की ऊर्जा के समन्वय की आवश्यकता तथा महत्व पर भी बल दिया है। प्रस्तुत आलेख में कला समेकित शिक्षा के अंतर्गत विषय एकीकरण गतिविधि पर विशेष जोर दिया गया है, जिससे विद्यार्थी पाठ में दी गई गतिविधियों को करने के लिए हिंदी विषय के साथ ही राजनीति विज्ञान का समान रूप से अध्ययन करेंगे तथा अपने अनुभवों से जोड़ सकेंगे।

दृश्य आरेखण

१- स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानाध्यापिका जी के द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् विद्यार्थियों को संबोधित करना।

२- विद्यालय से घर वापस जाते समय मीनू के द्वारा माँ से प्रधानाध्यापिका जी के द्वारा कही गई बातों पर चर्चा करना।

संस्मरण - मेरे संग की औरतें

३- घर पर नानी जी को संस्मरण में लिखी घटनाओं के बारे में बताना।

४- मीनू की माँ के द्वारा एक अनजान महिला पर अविश्वास करने से खिन्न होकर नानी जी के द्वारा उन्हें अपनी सखी के द्वारा एक चोर को पूर्णतः भलामानुष बना देने की कथा सुनाना।

‘सीखने के प्रतिफल’

- १- क्रमबद्धता और प्रकरण की एकरूपता बनाए रखना।
- २- प्रभावपूर्ण भाषा तथा लेखन शैली का स्वाभाविक रूप से प्रयोग करना।
- ३- हिंदी की एक विधा से दूसरी विधा में रूपांतरण के कौशल का विकास करना।
- ४- देखी हुई घटनाओं का वर्णन करना और उन पर अपनी प्रतिक्रिया देना।
- ५- एकाग्र चित्त होकर अभीष्ट गति के साथ मौन पठन करना।
- ६- संदर्भ के अनुसार चर्चा के द्वारा शब्दों के अर्थ की पहचान करना।
- ७- पठित सामग्री के विभिन्न अंशों का परस्पर संबंध समझना।

पात्र परिचय

मुख्य कथा के पात्र -

लेखिका की नानी

पारंपरिक विचारों वाली सुलझी हुई किंतु देश की आज़ादी के लिए समर्पित महिला

लेखिका की माता

मितभाषी, स्वाभिमानी एवं मूल्यों में विश्वास रखने वाली महिला

परदादी जी

परंपराओं तथा लीक से हटकर चलने वाली 60 वर्षीय बुजुर्ग ग्रामीण महिला

सहायक पात्र

ग्रामीण महिला

सहायक कथा के सचित्र पात्र परिचय

प्रधानाध्यापिका- 40 से 45 वर्ष की महिला



मीनू की नानी जी- 60 वर्षीय बुजुर्ग महिला



मीनू की माँ- 35 वर्ष की महिला



मीनू- 14 -15 वर्ष की
बालिका



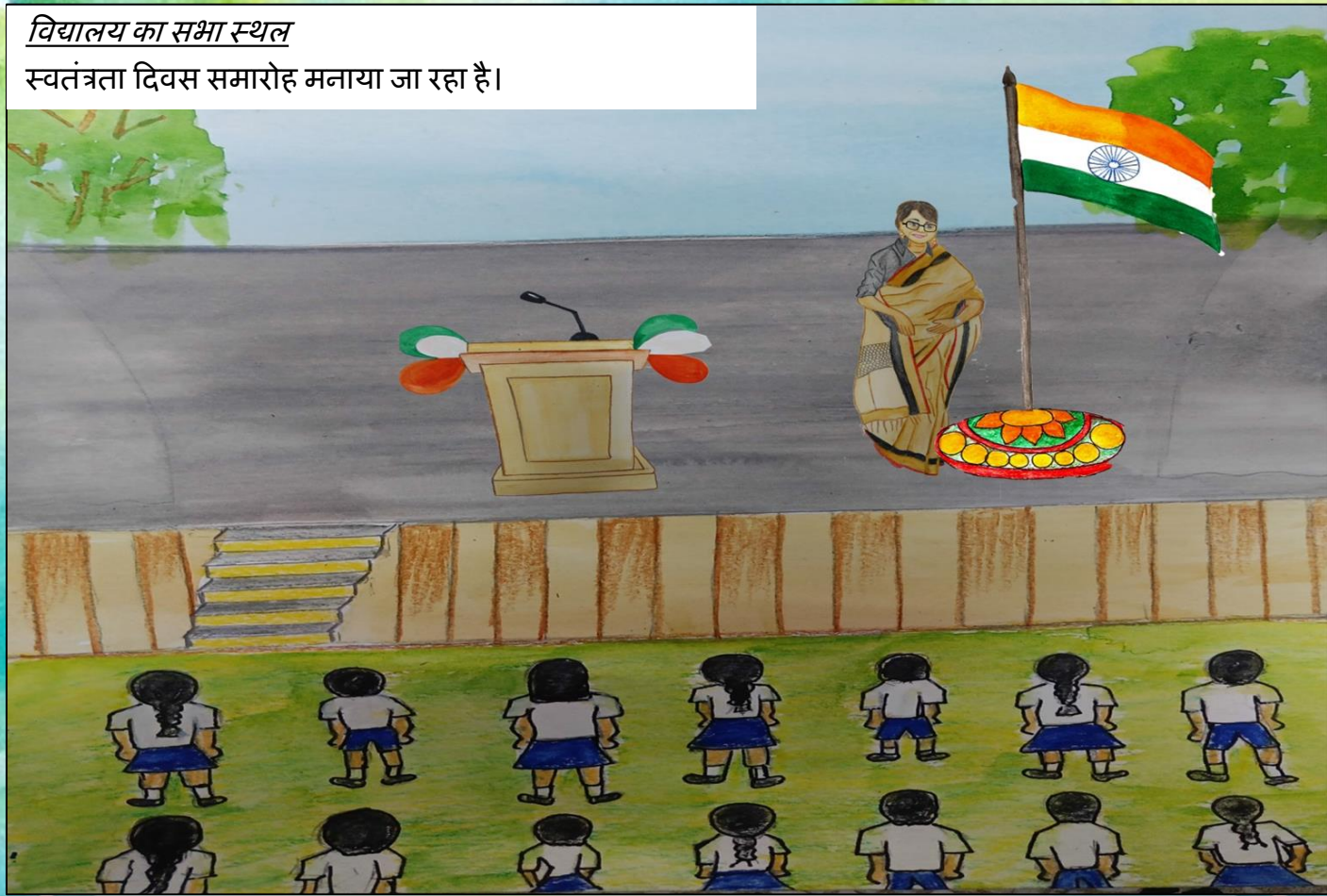
ऋषि- 11-12 वर्ष का
बालक



पहरेदार- उम्र 25-30
वर्ष

विद्यालय का सभा स्थल

स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया जा रहा है।



ध्वजारोहण के पश्चात् प्रधानाध्यापिका जी विद्यार्थियों को संबोधित करती हैं।



ध्वजारोहण के पश्चात् सभी बच्चे घर वापस चले गए हैं।
विद्यालय के द्वार पर चौकीदार के पास खड़ी हुई बालिका (मीनू)।
बालिका की माँ उसे लेने कार से आती हैं।

माँ, आज हमें विद्यालय में बहुत
आनंद आया। मैंने देशभक्ति का एक
गाना भी गाया था।

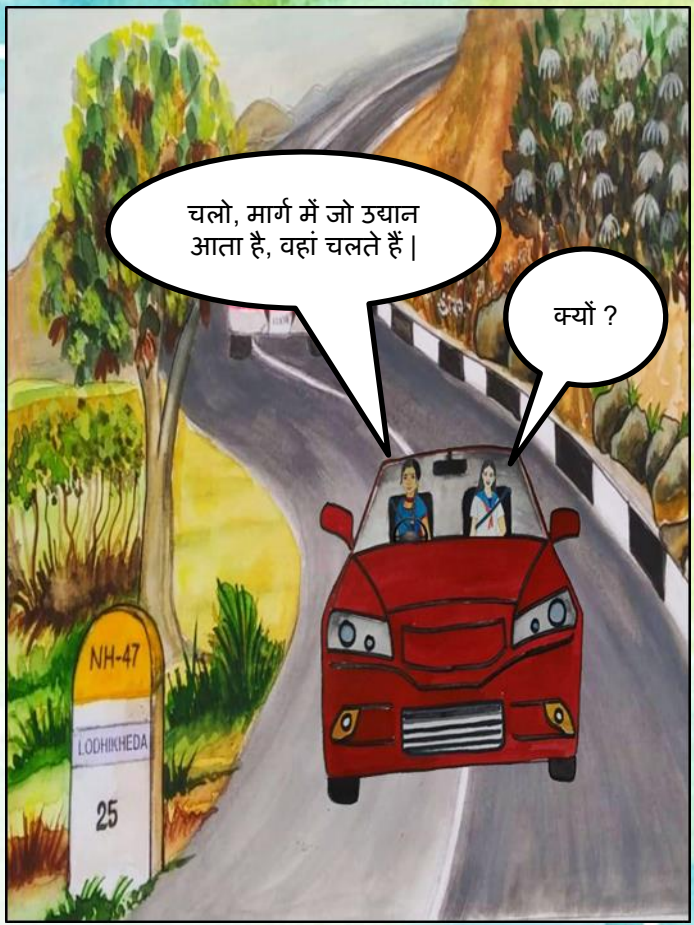
अरे वाह! यह तो
बहुत अच्छा रहा।

माँ, मुझे प्रधानाध्यापिका
जी की एक बात समझ में
नहीं आई।

कौन सी
बात ?

उन्होंने कहा कि हमें देशभक्ति
को अपनी सोच में रखना है।
यह भला कैसे हो सकता है?

हो सकता है।





हाँ, याद आया हमारी हिंदी
अध्यापिका ने भी कक्षा में
एक पाठ पढ़ाते समय यही
सब कुछ बतलाया था ।



अच्छा! "क्या नाम
था उस पाठ का"?



'मृदुला गर्ग' द्वारा लिखित
संस्मरण 'मेरे संग की
औरतें'।

"क्या बताया गया
उस पाठ में" ?



इस पाठ में लेखिका की नानी जी
पारंपरिक रीति-रिवाजों को मानने
वाली घरेलू महिला हैं किंतु नाना
जी पाश्चात्य तौर तरीकों के
अनुसार जीवन जीते हैं ।





लेकिन इसमें देशभक्ति की भावना का उल्लेख कहाँ हुआ ?

माँ नानी जी ने जीवन भर नानाजी के तौर-तरीकों पर आपत्ति नहीं की किंतु मौत के करीब आकर वे अचानक मुँहजोर हो उठीं ।



ऐसा क्या किया उन्होंने ?



उन्होंने अपने पति के मित्र 'प्यारे लाल' से मिलने की इच्छा जाहिर की ।

"क्यों" ?



उन्होंने उनसे का "वचन दीजिए की मेरी लड़की के लिए वर आप दूँदेंगे ।



उन्होंने कहा, मेरे पति तो साहब हैं और मैं नहीं चाहती मेरी बेटी की शादी साहबों के फरमाबरदार से हो।

उन्होंने ऐसा क्यों किया ?



लेखिका लिखती है कि उनको नानी जी की इस बात का मतलब बहुत बाद में समझ आया।



अर्थात ?

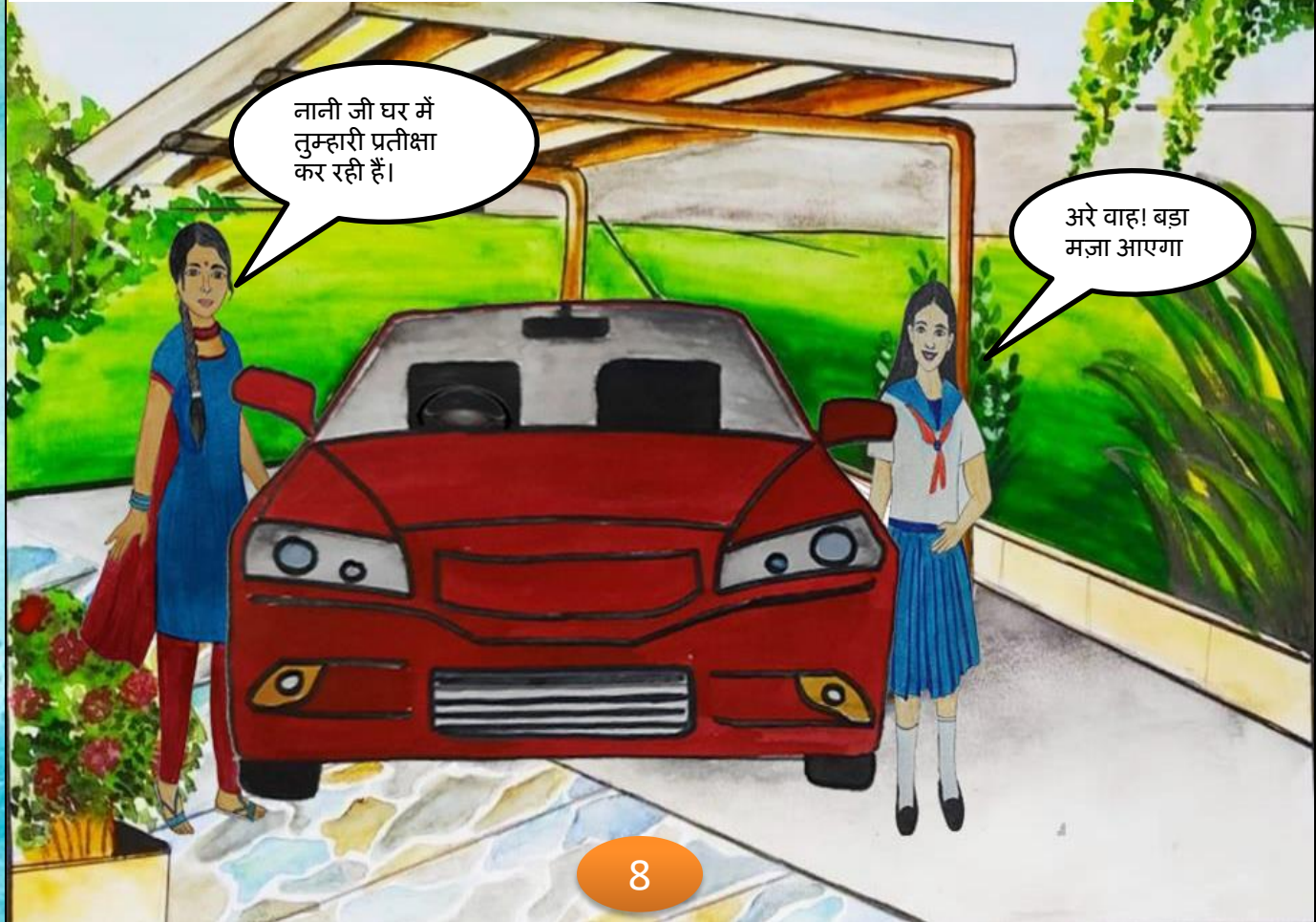


बेशक उन्होंने अपने पति के रहन-सहन पर एतराज नहीं किया लेकिन स्वयं वे पूरी तरह देशहित के प्रति समर्पित थीं।

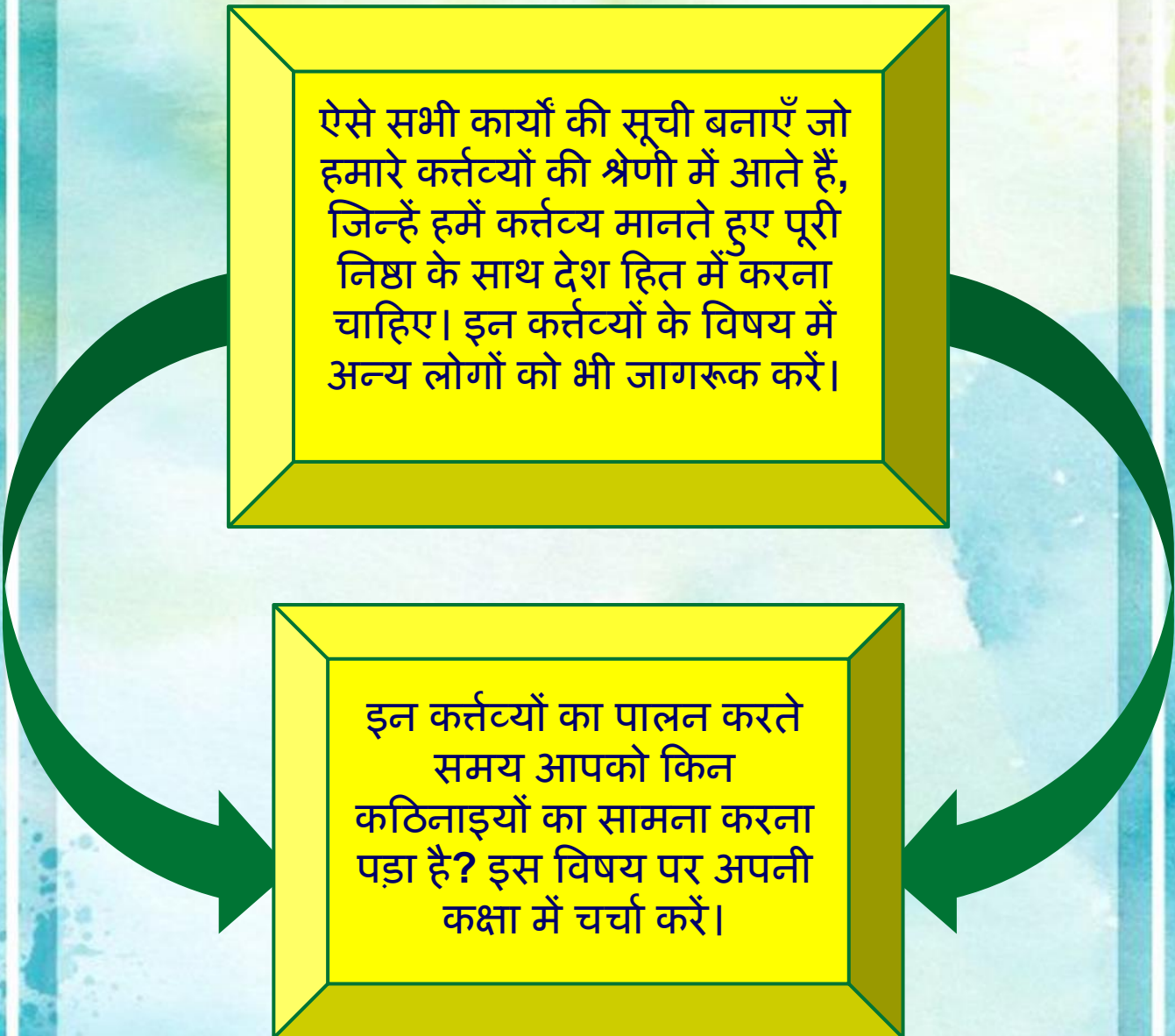
अच्छा इसलिए वह चाहती थीं कि उनका दामाद स्वतंत्रता सेनानी हो।



मीनू और उसकी माँ दोनों घर पहुँचती हैं। मीनू की माँ कार को पार्किंग में लगाती हैं।



विषय एकीकरण गतिविधि (हिंदी - राजनीति विज्ञान)



ऐसे सभी कार्यों की सूची बनाएँ जो हमारे कर्तव्यों की श्रेणी में आते हैं, जिन्हें हमें कर्तव्य मानते हुए पूरी निष्ठा के साथ देश हित में करना चाहिए। इन कर्तव्यों के विषय में अन्य लोगों को भी जागरूक करें।

इन कर्तव्यों का पालन करते समय आपको किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है? इस विषय पर अपनी कक्षा में चर्चा करें।

मीनू अपने घर पहुँचती है, वहाँ अपनी नानी जी को आया देख कर बहुत खुश होती है और उनके चरण स्पर्श करती है।

जुग-जुग जियो! तुम आज भी हमारी परंपराओं को मानती हो, यह बहुत अच्छी बात है।

क्यों ना हो नानी जी! अपनी परंपराओं को निष्ठा से निभाने से ही तो हमें सम्मान मिलता है।





अब बताओ, तुम किस संस्मरण की बात कर रही थी?

‘मृदुला गर्ग’ के द्वारा लिखित एक संस्मरण है।



क्या बताया है, उन्होंने संस्मरण में ?

संस्मरण में उन्होंने अपनी नानी और माँ के विषय में बताया है।



‘मृदुला गर्ग’? मेरी एक सखी का नाम भी मृदुला था। मैंने सुना था कि वह लेखिका बन गई थी। हो सकता है, यह वही हो।



अरे वाह! अगर यह आपकी सखी का संस्मरण हुआ तो कितना अच्छा होगा।



अच्छा छोड़ो, यह बताओ कि लेखिका ने क्या बात कही है, अपने संस्मरण में?

लेखिका की नानी की इच्छा अनुसार उनकी माँ का विवाह एक निर्धन स्वतंत्रता सेनानी के साथ हो गया।



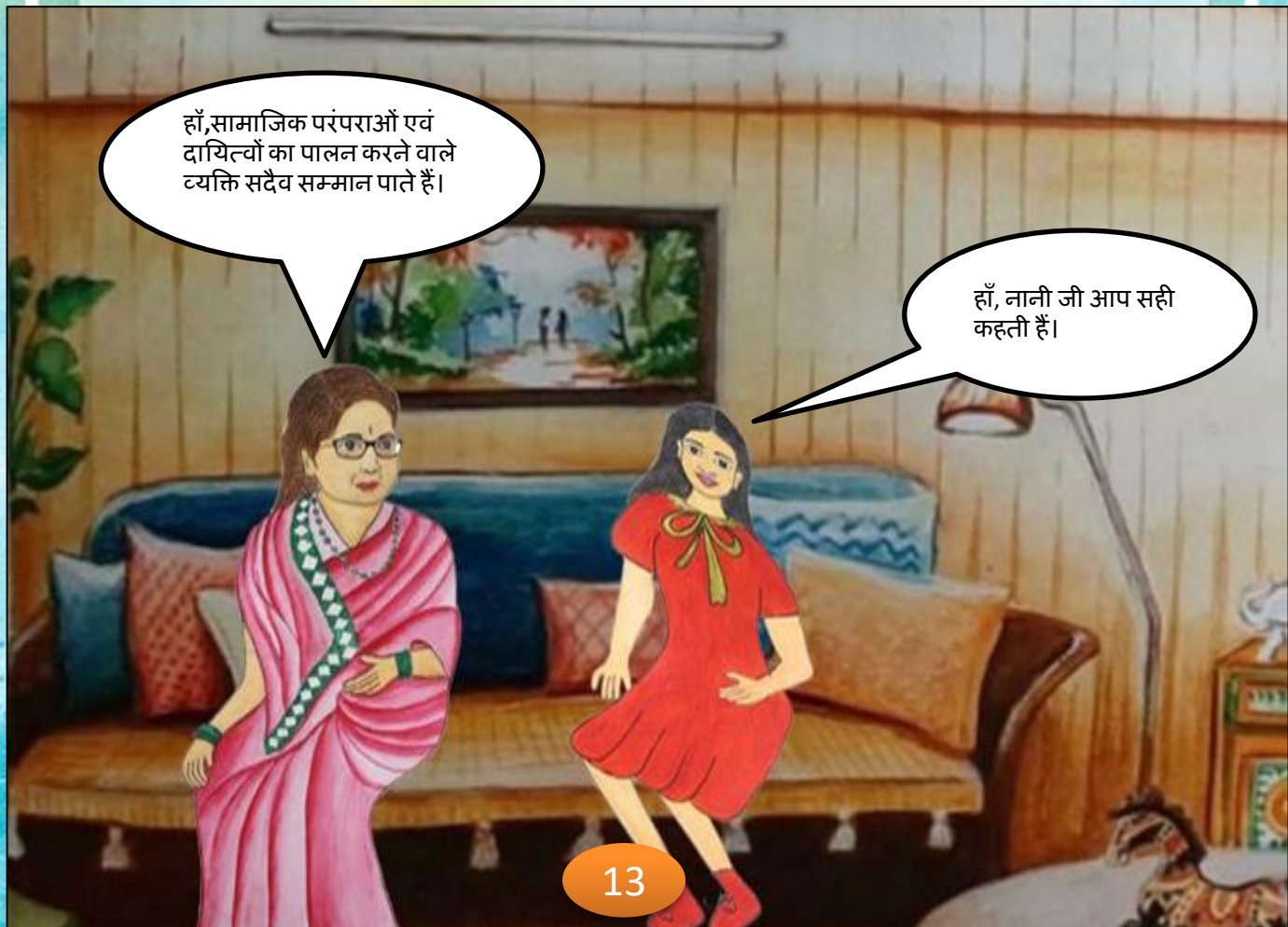
तब तो उनकी माँ बहुत दुखी रहती होगी।

नहीं, बल्कि वह तो घर की सभी परंपराओं को मानते हुए बिल्कुल सम्मानित जीवन जीती थी।



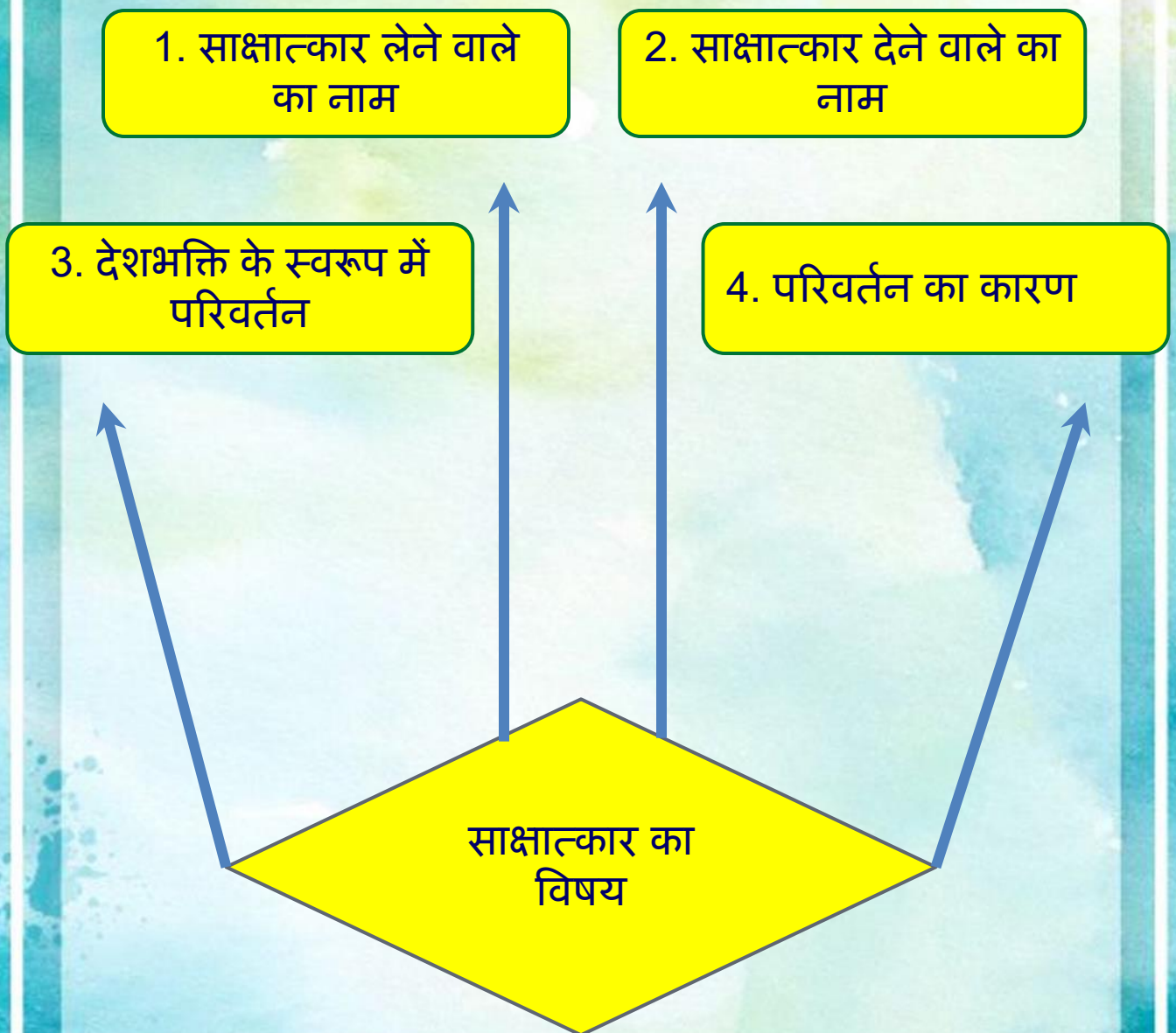
ओह! लेकिन उसने विवाह से मना क्यों नहीं किया?

संभवतः अपनी माता के समान ही उनके अंदर भी अपनी परंपराओं तथा देश के प्रति दृढ़ आस्था थी।



अनुभवात्मक गतिविधि

अपने घर की बुजुर्ग महिलाओं से साक्षात्कार करते हुए यह जानकारी प्राप्त करें कि स्वतंत्रता प्राप्ति के समय की तुलना में वर्तमान समय में देशभक्ति के स्वरूप में क्या परिवर्तन आया है?



घर के दरवाजे पर घंटी बजती है। मीनू की माँ दरवाजा खोलती है।

क्या काम है?
बताइए।

बहन जी, मेरे परिवार की
आर्थिक स्थिति सही ना होने
के कारण मुझे आपकी
सहायता की आवश्यकता है।

ठीक है, मैं आपके
लिए कुछ रुपए
लेकर आती हूँ।

नहीं-नहीं, मुझे पैसे
नहीं चाहिए। क्या मुझे
कोई काम मिल सकता
है?

तुम पैसे क्यों
नहीं लेना
चाहती?

मैं परिश्रम करके अपने
परिवार का पेट पालना
चाहती हूँ, इसलिए मुझे
पैसे नहीं काम चाहिए।

अभी तो
मेरे पास
कोई काम
नहीं है।

ठीक है, कुछ दिनों बाद
मैं पुनः आऊँगी अगर
मेरे लिए कोई काम
निकल सकता हो, तो
बताइएगा।

महिला वापस चली जाती है।
नानी जी सारी बातें सुन रही होती हैं और वे बहुत निराश होती हैं।

सिर्फ जान पहचान ना होने की वजह से तुमने उस पर भरोसा नहीं किया, मुझे विश्वास नहीं हो रहा।

लेकिन माँ, वह महिला आपराधिक मानसिकता की भी हो सकती है।

हाँ, कुछ लोग अवश्य गलत करते हैं, लेकिन इस वजह से सभी पर संदेह नहीं करना चाहिए।

यह सब कहने की बातें हैं अगर वह महिला चोर हुई तो?

अरे! तुझे तो चोर होने का शक है। मेरी सहेली 'मृदुला' की परदादी' ने तो सचमुच के चोर को इंसान बना दिया।

अच्छा! वह कैसे?

मीनू और ऋषि जो दूसरे कमरे से सारी बातें सुन रहे होते हैं, वे भी उत्सुकता से वहाँ आ जाते हैं।



नानी जी घटना को सुनाना प्रारंभ करती हैं। यह उस समय की बात है, जब उनके घर में शादी हो रही थी। बारात जाने के बाद जब सभी महिलाएँ आँगन में रतजगा मना रही थीं।



कुछ समय पश्चात् परदादी जी को हल्की-सी नींद आने लग गई थी। उन्हें किसी की आहट आई। ऐसा लगा कि आँगन से कोई उठ कर आया है। उससे पानी पिलाने के ख्याल से उन्होंने पूछा-



दादी जी एक क्षण तो स्तब्ध रह गईं लेकिन फिर जैसे उनकी अंतरात्मा ने कहा, "लगता है, यह कोई जरूरतमंद है जो मजबूरी में चोरी करने पर विवश है किंतु अपने संस्कारों वश यह जानते हुए भी झूठ नहीं बोल पाया कि पकड़े जाने पर क्या दुर्गति होगी। तभी उन्होंने उसे विश्वास के फंदे में जकड़ने का निश्चय किया।



नानी जी उस घटना को याद करते हुए इस तरह उसमें डूब जाती है मानो उस घटना का सजीव वर्णन कर रही हो



मारे घबराहट और धर्म संकट के चोर परेशान हो उठा।



भगवान यहीं-कहीं, अगल-बगल में हैं, यह सुनकर वह ऐसा सकपकाया कि वह लोटा उठाकर चल दिया। पूरी सावधानी के साथ कुएँ पर लोटे में जल भरने लगा। उसी समय एक महिला ने उसे देख लिया। उसने शोर मचा दिया।



नानी जी वापस वर्तमान में आते हुए (कहानी आगे बढ़ती है)।





वह महिला दोबारा
आएगी तो मैं उसे घर
के काम के लिए रख
लूँगी।

अच्छी बात है।

नानी जी, यह घटना कुछ सुनी हुई
सी लग रही है। मृदुला गर्ग द्वारा
लिखित संस्मरण मेरे संग की
औरतें में भी बिल्कुल ऐसी ही
घटना का उल्लेख है।

इसका मतलब
कि ये 'मृदुला
गर्ग' आप ही की
सहेली हैं!

अरे हाँ! ऐसा ही
लगता है।

अरे! यह तो कमाल हो
गया। मैं अपनी कक्षा में
सबको यह बात
बताऊँगी।



माँ, आपकी सखी के
संस्मरण तथा हमारी
जीवन की घटनाओं में
कितनी समानता लगती
है ना?

हाँ, सही कहा।



ये तो प्रत्येक परिवार में
घटने वाली घटनाएँ हैं,
जिनसे हमें सीख प्राप्त होती
है।



जब भी हमें किसी घटना से
संबंधित निर्णय लेने में उलझन
हो तो हमें अपनी पहली पीढ़ी के
अनुभवों का लाभ अवश्य
उठाना चाहिए।





दोनों बच्चे हँसने लगते हैं। नानी जी दोनों बच्चों को प्यार से गले लगा लेती हैं और अपना ध्यान रखने के लिए कहती हैं। दोनों बच्चे नानी जी को 'शुभ रात्रि' कहते हुए अपने सोने के कमरे में चले जाते हैं।



अनुभवात्मक गतिविधि

आपके परिवार की कम से कम 2 पीढ़ियों की बुजुर्ग महिलाओं के नाम एवं उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं के विषय में चर्चा करें एवम किसी विशेष परिस्थिति में उनके द्वारा लिए गए निर्णय का आकलन भी करें एवं वर्तमान परिस्थितियों से उसे जोड़कर देखें।

‘प्रश्नावली’

- १- हम देशभक्ति को अपनी सोच में कैसे रख सकते हैं ?
अपने शब्दों में लिखिए।
- २- परंपराएँ हमारे जीवन में क्या महत्व रखती हैं?
वर्तमान समय में तकनीकी विकास से क्या हमारी
परंपराएँ प्रभावित हुई हैं? अपने विचार लिखिए।
- ३- मूल पाठ की 'नानी जी' एवं सहायक कथा की 'नानी जी'
दोनों पात्रों की व्यक्तित्व की विशेषताओं की तुलना
कीजिए।
- ४- नानी जी ने अपने अनुभवों के आधार पर मीनू एवं
ऋषि को सामाजिक तौर तरीके एवं नैतिक शिक्षा में
देने का प्रयास किया। आपके विचार से यह तरीका
कितना सही है?
- ५-आपने इस पाठ से क्या सीखा? अपने शब्दों में
लिखिए।

चर्चा

१) माँ जी ने सबके सामने कहा, “अब हम दोनों माँ- बेटे हुए, अब तेरी मर्जी तू चाहे चोरी कर या खेती”।

उपर्युक्त संवाद के आधार पर कल्पना कीजिए, अगर आप माँ जी के स्थान पर होते तो उस समय आप क्या निर्णय लेते और क्यों ?

इस विषय पर अपने सहपाठियों से चर्चा करें तथा अपने विचारों को साझा करें।

प्रस्तुत चित्रात्मक आलेख लेखिका 'मृदुला गर्ग' द्वारा लिखित संस्मरण - मेरे संग की औरतें हैं। इसमें लेखिका ने अपने परिवार की चार पीढ़ियों की महिलाओं (परदादी, नानी, माँ और स्वयं लेखिका) के व्यक्तित्व, व्यवहार तथा उनके आदर्शों के विषय में विस्तार से लिखा है। कथा को विस्तार देते हुए प्रस्तुत चित्रात्मक आलेख के कुछ दृश्यों में रचनात्मकता की स्वतंत्रता ली गई है, जिसका उद्देश्य मुख्य कथा के उद्देश्य के समकक्ष है। प्रस्तुत आलेख में कला समेकित शिक्षा के अंतर्गत विषय एकीकरण गतिविधि पर विशेष जोर दिया गया है, जिससे विद्यार्थी पाठ में दी गई गतिविधियों को करने के लिए हिंदी विषय के साथ ही राजनीति विज्ञान का समान रूप से अध्ययन करेंगे तथा अपने अनुभवों से जोड़ सकेंगे।

